

मध्यप्रदेशीय प्रसिद्ध कवि और लेखक  
राजिमनिवासी-पं० सुन्दरलालजी शर्मा त्रिपाठी  
रचित

अवश्य पढ़ने योग्य पुस्तकें  
कदापि न चूकिए, अवश्य मंगाइए

- १— श्रीराजीवक्षेत्रमाहात्म्य ... .. ॥
- २— श्रीमहादचरित्र नाटक ... .. ॥
- ३— श्रीध्रुव-चरित्र ( सङ्कोत-आख्यान ) ... .. ॥
- ४— श्रीकरुणा-पंचोमी ... .. ॥
- ५— श्रीविक्टोरिया-विशेष ... .. ॥
- ६— श्रीरघुराज-गुण कीर्तन ( स्वर्गीय रीवाधिपति का  
सुवर्ण वर्णन ) ... .. ॥
- ७— प्रलाप-पटावली ( कवि-हृदय में समय समय पर  
उत्थित सुन्दर भावपूर्ण भजनों का संग्रह ) ... .. ॥
- ८— श्रीक्षीर-गङ्गा दानलीला ( ग्रन्थकर्ता-चित्र-युक्त ) प्रथम  
श्रेणी की छपाई । द्वितीय संस्करण । यह पुस्तक क्षीरगङ्गा  
भाषा भाषियों द्वारा विशेष सम्मानित हुई है । मूल्य ॥  
ग्रन्थकर्ता की अन्यान्य उत्तम पुस्तकों के लिये ठहरिये ।  
शीघ्र प्रकाशित होंगी ।

प्रत्येक पुस्तक के लिये डाकखर्च अलग देना पड़ेगा ।  
बुकसेलरों को भरपूर कमीशन दिया जावेगा । मुझे लिखिये ।

श्रीनीलमणि शर्मा

राजिम, रायपुर, सी० पो०

## श्रीध्रुव-चरित्र-आख्यान

\*

प्रणेता

राजिम-निवासी

श्री० पं० सुन्दरलाल शर्मा, त्रिवेदी

\*

प्रकाशक

श्रीनीलमणि शर्मा

जमींदार, चन्द्रपुर, पो० राजिम,

जि० रायपुर, सी० पो०

\*

मूल्य ॥



श्री पण्डित मन्नूलाल-स्मारक-  
वाचन-मन्दिर, राजिम,  
जि० रायपुर सी. पी. ।

इस पवित्र राजिम नगर में हिन्दी का यह  
उच्चश्रेणी का पुस्तकालय लगभग दो वर्षों से  
जनसाधारण का उपकार साधित कर रहा है,  
जिन महाशयों को द्रव्य अथवा पुस्तक द्वारा  
इस पुस्तकालय को सहायता देने की इच्छा हो  
मेरे पते से भेजें । सधन्यवाद स्वीकृत किया जावेगा  
तथा पुस्तकालय की वार्षिक रिपोर्ट में उल्लि-  
खित होगा ।

भवदीय, निवेदक—

श्रीनीलमणि शर्मा, असिस्टेंट सेक्रेटरी,  
दी पण्डित मन्नूलाल मेमोरियल पब्लिक लायब्रेरी  
पोस्ट—राजिम Rajim  
जि० रायपुर, सी. पी. (B. N. Ry.)

पुस्तकालय १८६३ वि० सं० — ११०-६

श्रीध्रुव-चरित्र-आख्यान

कीर्तनकारों को परमोपयोगी

प्रणेता

राजिम-निवासी

श्री पं० सुन्दरलाल शर्मा त्रिवेदी

प्रकाशक

श्रीनीलमणि शर्मा

जमोनदार चन्द्रसूर, पो० राजिम,

जि० रायपुर, सी० पी०

वि० सं० १८७३

मुद्रित = ११



पण्डित रामजोलाल शर्मा के प्रबन्ध से  
हिन्दी प्रेस, प्रयाग में मुद्रित

## निवेदन

नौ वर्ष पूर्व यह सुद्र आख्यान राजिम के भूतपूर्व सब  
मोष्ट मास्टर श्रीयुक्त रामचन्द्र राव सिद्धान्ती के आग्रह से,  
जो प्रायः कीर्तन किया करते थे, लिखा गया था और स्थानीय  
सज्जनों ने इसे पसन्द किया था, अतः उक्त महाशय को अनेक  
धन्यवाद करते हुए अब इसे मैं प्रकाशित करता हूँ।

राजिम  
ता० १३।८।१६ }

बिनीत  
प्रकाशक



\* श्री: \*

## श्रीध्रुव-चरित्र

छन्द

जान सकल मतिमान मुनिन जेहि

॥ ध्यान धरत दिन रात हृदय महँ ।

भक्त जनन संग जगत जटिल पहँ

॥ तत्क सकल अनुरक्त रहत जहँ ॥

सुन्दर कविवर मन मन्दिर पहँ

बन्द जवन मकरन्द वरण हय ।

बन्दत इति सुख कन्द करण मँद

॥ नन्द चरण दुख द्वन्द हरण जय ॥

शिखरिणी

कछू खासी खासी जगत सुखराशो की कथा ।

यहाँ गाऊँ पाऊँ कछुक यदि आज्ञा मति यथा ।

सुनेँ गावैं भावैं हृदय हरषावैं बुध जनै ।

तबै ह्याई भाई । सफल कविताई निज गनै ।

देहा

ध्रुव चरित्र अब कहत हौं, कछुक यथामति गाय ।

जान भाँति जगपति मिले, जङ्गल ही में जाय ॥



## वसन्ततिलका

ऐसा कठोर बच रानि जवै उचारो ।  
 सो तीर भाँति ध्रुव होय कुछेद डारो ।  
 जै कंजपत्र इव नेत्र विशाल सोहैं ।  
 तापै प्रपूर जल आयेउ बाल कोहैं ।

## सवैया

लेत उसास हिये भरिकै सुसकी सुसकी शिशुकीन समात है ।  
 त्यों कवि सुन्दर नैन बिलासते आंसुन बुन्द भले टपकात है ।  
 कैसे कहैं उपमा तिहि की कविचन्द किधौं अमि बुन्द चुचात है ।  
 कीधौं सरोज की पाखुरी तें यह मोतिन को लर टूटत जात है ॥

## तोटक ।

दृग कंज में आंसुन मोचत है । कबहुँ लघु हाँथन पोंछत है ।  
 सुसकै घर बाल बिनाद करे । दृग मीचे चलै भहराय परै ॥  
 पग डोलत भूपर राखत है । मुखतें कछु तोतरी भाषत है ।  
 ध्रुव भाँति अहै दिग मातु गये । जननी तबहीं उर लाय लिये ॥  
 कैसे रोवत लाल हमारे ।

मेरे अहो ! प्राण के टुकड़े अरे ! अरे ! आँखिन के तारे ! ॥ कैसे ॥  
 अति सुकुमार कमल तें कोमल शोभा सदनमदन मतवारे ॥ कैसे ॥  
 काहू धौं तोको डर पायो कै तोको काहू ने मारे ॥ कैसे ॥

कै काहू ने झूठ खिजायो ताके मोको हाल बतारे ॥ कैसे ॥  
 अनियारे कजरारे अंखियन अंसुवन बहत पनारे ॥ कैसे ॥  
 ताको निरखि गहत धीरज नहिं बिदरत हृदय होहु चुपवारे ॥ कैसे ॥  
 आवो तोरी लेऊँ बलैया बैठा गोद पियारे ॥ कैसे ॥  
 सुन्दर सुकवि मातु सुनीति यों पुनि २ उठति उचारे ॥ कैसे ॥

मैया ! मोहि माता ने मारी ।  
 मोको कहि गोदतें उठजा तेरे जो गोद नहिं मारी ॥ मैया ॥  
 यह मुँह नहीं गोद पितु लायक चाहत पकरन सरग अनारी ॥ मैया ॥  
 मेरे गोद कहु जनमत यदि जो विधि लिखत लिलारी ॥ मैया ॥  
 तौ पितु गोद मिलत बेटा ! तोहि ऐसे कहि नीचे बैठारी ।  
 बाँह पकरि भुँइया मह ठेली क्रोधित मेरो ओर निहारी ॥  
 मातारी ! दुख जात न सहि सो कोऊ जतन बताउ हहारी ।  
 टपकत आंसु कहत ध्रुव बालक गहि कर अञ्जल सारी ॥  
 सुन्दर सुकवि बात सो छिद गई मन भीतर महतारो ।

बेटा मातु कही सब साँची ।  
 या में राई को अन्तर नहिं बात नहीं यह रंचक काँची ।  
 बिन पूरब तप किये मिलत नहीं यह पदवी मन राँची ॥  
 सो तुम तात नहीं कीन्हैउ कछु गोदी बैठन की मति माँची ।



( २ )

षट्पद

( कथाभाग )

एक समय उत्तानपाद नृपराज विराजत ।  
 भीतर भवन अनूप जाहि लखि सुरपुर लाजत ॥  
 भक्तमकात चहुं ओर मनिन भालर समुदाई ।  
 चित्रित द्वार दिवार फरस अरु छत झँसनाई ॥  
 जहँ जगमगात खंभन खेर अति अपार शोभा लसै ।  
 अवलोकि जाहि त्यागीन के लोलुपता ते लव खसै ॥

सवैया

सोहत मंत्र अनेक प्रकार बिहार के ठाम अराम सो छाजत ।  
 तोषक चारु जरीन के काम को रेशम केर सुभालर राजत ॥  
 जाके बने पुस्तराज के पायन यों परयंक जहाँ छवि छाजत ।  
 पाणि गहे तँह रानि लघू सुरुची कर हैं नृपराज विराजत ॥

उड़ियाना

बालक भुव मन्द हँसत पितु समीप आयो ।  
 जहँ नृप उत्तान पाद सोहत छवि छाये ॥  
 छोटे कर छोटे वपु सोहैं ।  
 छोटे अति दसन हसन मृदुल हृदय मोहैं ।

( ३ )

छन्द

भरै कटाक्ष प्रेम ते विमात के दिगै गयो ।  
 विहेत ही प्रकाश दाँत पाँत को जहाँ भयो ।  
 कछु तहाँ न प्रीत को असार बाल पायऊ ।  
 समीप पै तबै उत्तानपाद के सिधायऊ ।

भुजंगप्रयात

गयो गोद में मोद ते बाल छाये ।  
 तहाँ जाय बैठो महानन्द पाये ।  
 हसो मन्द ओ प्रेम पूरो निहारो ।  
 विमाता हृद के किधौ हल डारो ।  
 जली जात थी सीत के डाह माँही ।  
 पति प्यार वापै सकी देख नाहीं ।  
 तबै बाँह दोनों धरी ओ उतारी ।  
 तलै गोद तैं के महो में बिठारी ।

शिखरिणी

अरे प्यारे वारे ! हमि सरिस प्यारे मुँह कहाँ ।  
 कियो तूने छूने सरग इव गोदी पितु महा ।  
 कहूँ जागै भागै उदर मम माँगी प्रकट तो ।  
 तबै ऐसो जैसा सुपितु कर गोदी बिलसतो ।



जो चाहत याहु तो ऊँचो पद पाऊं निर्वाची ॥  
कवि सुन्दर तब तो तप कीजै मैं तोहि कहहुं कीर कह खाँची ।

\*

लालन ! करहु तुम तप जाय ॥

जीव कहँ जगपति कृपा तें कछु अप्रापत नाय ॥ लालन० ॥  
राज सुख पितु सदन सुततिय सदन सम सब आय ॥ लालन० ॥  
मिलत बिछुरत होत नाशत अवशि एक दिन पाय ॥ लालन० ॥  
जगत को सब तुच्छ पद छन भरहि पुत्र लखाय ॥ लालन० ॥  
एक अविचल मोक्ष पद याँचत जिन्हें मुनिराय ॥ लालन० ॥  
करहु सो सुत सफल जीवन त्रिकुल तारहु धाय ॥ लालन० ॥  
सुकवि सुन्दर अमिष सम यह सीख दीनी माय ॥ लालन० ॥

बनजारा

मैया ! हंसत बिदा मोहि दीजै । जातें जाय कछु तप कीजै ।  
तुतो नोकी शिक्षा दीन्हीं । जैसे इतनी किरपा कीन्हीं ॥  
तैसेई इतनी दाया कीजै । मैया० ।  
बन में जाकर मैं तप लाऊँ । हरिसों अपनी लगन लगाऊँ ॥  
हा ! हा ! भूतल पै यश लीजै । मैया० ।  
जातें यह अविचल पद पाऊँ । फिर कै जीवन मरन न पाऊँ ॥  
माता ऐसो जनत करीजै । मैया० ।  
है यह ध्रुव बालक की बाणी । जाको सुन्दर सुकवि बखानी ।  
मैया ! हरिजन ! छोड़ी पीजै । मैया हंसत बिदा मोहि दीजै ॥

\*

मेरे प्यारे ! लालारे ! तप कीजै जाय जाय ।  
यह सकल सुकृत कर सार भाग । कुल जासु होहि अनुराग  
लाग, हरि प्रीति मोहि नित रहै पाग । मेरे प्यारे० ।  
पितु मातु और गुरु कुल समेत । इसीस पुस्त पुरषा समेत ।  
सत्पुत्र अहह ! सब तार छेत । मेरे प्यारे० ।  
मैं धन्य जहाँ औतार लीन्ह । मम उदर पुत्र पावन सुकीन्ह  
अस बड़े भाग विधि पुत्र दीन्ह । मेरे प्यारे० ।  
मैं हरष सहित आशीष देत । तोहि मिलहि जगतपति करि सुहेत  
अह लहु अक्षय पद सुख निकेत । मेरे प्यारे० ।  
कवि सुन्दर इमि वरपत विचार । यह वचन रचन हरिजननहार ।  
जो गावत भवनिधि होत पार । मेरे प्यारे० ।

\*

सुनत वचन अति आनन्द बाढ़ो ।  
पुनि २ विहँसि मातु पग परसत हरपत हृदय गहत कर बाढ़ो ।  
धनि २ मातु उचित शिक्षा दे डूबत कुमति सिन्धु तें काढ़ो ॥  
ऐसे कहत लहत परमानन्द ध्रुव बालक उत अविचल ठाढ़ो ।  
सो को सकै वरण सुन्दर कवि जग को खटखट पल मह डाढ़ो ॥

\*

चलत ध्रुवचन्द पग मन्द घरनी धरै ।  
अतिहि बयबाल कछु हाल कहि जात नहि  
कौन शिशु जगत अस कठिन करनी करै । चलत० ।



जात सोंचत नयन जलज नीर मोचत कछू कौन विधि अहह  
अभिलाख पुरो परै । चलत० ।

कठिन कट कटत तरु सघन बन बनन में जात आगे बढ़े  
नेक नाहिं न डरै । चलत० ।

सुकवि सुन्दर जिन्हें जरठ मुनि मरत करि बरस बय पाँच को  
लिन्हें चाहत अरै । चलत ध्रुव० ।

कैसे पाऊँ राम जीवन धन ।

कितको जाऊँ कौन बतावै वा बिन मोहि न अराम ।

जीवन जग को सुख सब चूड़े जावै नहिं मोहि तासो काम ।

मेरो मनमोहन सेां अटको वही मेरे घनश्याम ।

सोई हित् मित्र सोई मेरे सोई सुत सोई बाम ।

सुन्दर सुकवि आज में कह जो मिला देय सुखधाम ।

### मन्दाक्रान्ता

ऐसे २ विहाले उचरतवाले ठीक आये निराले ।

छोटे २ बार होलैं मनहरि डोलैं देखते लाल गोलैं ॥

काले २ करोलैं फुकरत व्यालै सिंह हू शब्द भालै ।

तौने काले बिणा लै सुर ऋषि आले शान्ति को वेष डालै ॥

ऋषि बोले शिशु जात कहाँ तू ।

फुकरत व्याल सिंह गरजत इत कैसे आये पुत्र यहाँ तू ॥

तोको देखि दया हिय उपजत कहै देय पहुँचाय जहाँ तू ।

तेरे बाप मातु कहँ तेरी क्यों बेटा ! नहिं जात तहाँ तू ॥

ऋषिजी मुझे देहु बतलाय । कहाँ पर रहते हैं जगराय ॥

और कुछ मुझे न लागै नीक । यही बस मुझे बतादो ठीक ॥

जरासा उनसे है कुछ काम । रुपा करके कहिये सुखधाम ॥

अलख अगोचर अगम जो निर्विकार निकार ।

तेरा मेरा सारा जग का है सिरजन हार ॥

उसो का पता देहु बतराय । कहाँ पर रहते हैं जगराय ॥

बाप बेटा जाय धन धाम । अन्त को कोई न आते काम ॥

जगत की सारी झूठी नात । एक नहिं इसके लगते दाँत ॥

नर अमूल्य तन पाय के जो नहिं भजत मुरार ।

थू थू उसकी जिन्दगी में कोटि कोटि धिकार ॥

बता दो इसका सरल उपाय । कहाँ पर रहते हैं जगराय ॥

आज इतनी ही है ऋषिराज । रुपा कीजै हम पर महाराज ॥

जिहि प्रकार जगपति मिलै बड़ कृपाल जगपाल ।

हूँ कृपाल सुन्दर सुकवि मुझे बतादो हाल ॥

प्रभू मैं परता हूँ तुव पाँय । कहाँ पर रहते हैं जगराय ॥

मुनीजी मुझे देहु बतलाय ॥



## दोहा

सुनत वचन गद्गद भये, ऋषिवर परम रूपाल ।  
अमृत हूँ ते सरस सिख, देन लगे तिहिँ काल ॥

## गीत

जावो, जावो, जावो, कीजै तप, तप, तप ।  
पहिले साधि कर्म षट् जितने, आसन कठिन करावो ।  
पूरक कुम्भक रेचक करि कै, प्राणायाम लगावो ॥  
कीजै जप, जप, जप । जावो० ॥  
हृदय कमल में अमल ब्रह्म को पीले दृष्टि जमावो ।  
ज्योतिष रूप परम आनंद घन करत अचानक पावो ॥  
भप, भप, भप । जावो जावो० ॥  
श्याम वरण भुज चार मुकुट धर वनमाला धर ध्यावो ।  
होतहि सिद्धि पुत्र ध्रुव ! सुनियो कवि सुन्दर तर जावो ॥  
अप, अप, अप । जावो जावो० ॥

## छन्द ।

सुनत सिख कान पै ध्यान कै ईश  
ऋषिराय के पाँय पै शीश राखो तबै ।  
कहत आनन्द घने तीन नाहिन बने  
करत तप चरण इक खड़े लाये जवै ॥

सींच कर प्राण कह रोकि शुभ स्वांस कह  
अहह शिशु अहह यह कठिन करनी करै ।  
ब्रह्म को ध्यान करि लीन हूँ ब्रह्म मह  
प्रेम परिपूर कर हृदय भक्ती करै ॥

## भजन ।

हरि सम कौन दयाल जगत में ।  
जो उनको मन बच कृत ध्यावै तारत ताको एक पलक में ।  
हरि सिवरी गीध अजामिल तरिगो गणिका तरगई रामकहतमें ॥  
हरि सुन्दर उनकी एक भक्ती प्रिय लाखन तरिगये पाँचगहतमें ।  
हरि सम०

## लावनी ।

ध्रुव बालक को परम भक्त भगवान् जान जय पाते भये ।  
क्षीर सिन्धु को छोड़ जहाँ पर ध्रुव बालक थे आते भये ॥  
अमृत उनपर सींच प्रेम की दृष्टि देख जन दुखहारी ।  
उठो ! उठो !! बस हुआ बहुत तप कहे भक्त मंगलकारी ॥  
बेटा ! तुमने किया कठिन तप बड़ा ध्यान तुमने धारा ।  
खोला आँखें लखो सामने हुआ सिद्ध परिश्रम सारा ॥  
इसी भाँति से ध्रुव को प्रभु करुणा बच से समझाते भये । ध्रुव  
खोली आँख जभी ध्रुव ने आगे जगदीश्वर को पाया ।  
जिन्हें अगोचर औ निरीह निर्गुण सब ऋषियों ने गाया ॥



श्याम बदन भुज चार हार उर पीताम्बर सुन्दर धारे ।  
 मोर मुकुट की चटक देख ध्रुव नयन प्रेम अंसुवन ढारे ॥  
 शरण शरण कहि चाहि २ प्रभु चरण तबै पर जाते भये । ध्रुव०  
 निजकर कमल उठाय लीन्ह उरलाय धन्य ! ध्रुव बाल तुम्हे ॥  
 कहै जगतपति मांगु मांगु सुत ! होय हृदय जो चाह तुम्हे ।  
 तीन लोक का राज कहै तो अभी तुम्हे मैं दे डालूँ ।  
 अगर कहै विष्णू पद भी तो अभी सत्य उसको पालूँ ।  
 इस प्रकार माया की लालच दै उसके फुसलाते भये ॥ ध्रुव० ॥  
 कहा तबै ध्रुव प्रभू मुझे झूठी माया की चाह नहीं ।  
 तीन लोक का राज और इन्द्रासन की परवाह नहीं ॥  
 अगर कृपा हमपर कृपाल की तो इतनी किरपा कीजे ।  
 चरणकमल में भक्ति दान दे अविचल पद हमको दोजे ॥  
 एवमस्तु वैसा ही होगा कहि के हरि मुसक्याते भये ॥ ध्रुव० ॥  
 ऐसे सहज कृपाल पाय जिस ने छिन भर नहिं ध्यान किया ।  
 छी है उसकी जिन्दगानी में जनम अकारथ खोय दिया ॥  
 मनुज देह जिसके पाने को सुरगन भी ललचाते हैं ।  
 हाय ! हाय ! धिक्कार हमें है नाहक उसे गुमाते हैं ॥  
 कवि सुन्दर इस भाँति कथा ध्रुव की लिख हेत बनाते भये ।  
 ध्रुव बालक को परम भक्त भगवान जान जब पाते भये ॥ ध्रुव०

बोले भैया सन्तो सबै राम राम राम ।  
 राम राम राम सीता राम राम राम ॥  
 नाती बेटा नारी पोता हाँथी औ धनधाम ।  
 अन्त समय कोउ काम न पेहँ जैहँ छूट तमाम ॥  
 रूप बढ़ाया खाँग बनाया फूले जात दमाम ।  
 भैया जिस दिन प्राण उड़ेगा जरि जैहँ सब चाम ॥  
 झूठी दुनियाँ झूठी माया कोइ न परिहँ काम ।  
 पाप पुण्य ही संगी होंगे भजलो हरि को नाम ॥  
 परिहँ मूसर सिर में जा दिन कोउ न परिहँ काम ।  
 सुन्दर ता दिन कौन बचैहँ भजलो सीताराम ॥

शुभंभूयात्